

Telangana Today 13-May-2021

[Fresh Chapter]

Restoring glory of iconic stepwells

Authorities shortlist several stepwells; works being taken up in phased manner

NABINDER BOMMALA
HYDERABAD

A fresh chapter in history awaits the heritage stepwells in the city and its neighbourhood. These water bodies, which are important for ground water recharging apart from being part of the city's precious heritage, are being revived and restored by the State government with city-based water warriors too chipping in with their own efforts.

Two water bodies with historical significance that were recently restored by the Hyderabad Metropolitan Development Authority are the Bhagwandas Bagh Baoli and Shiva Bagh Baoli, both of them located near Gudimalkapur. Works are underway near the Saidanima tomb near Tank Bund.

The Hyderabad Design Forum (HDF) submitted a list of 100 wells in the State to MA&UD department. The authorities have decided to shortlist the wells which will get a facelift and take up works in a phased manner while the water warriors are contributing in their own individual capacities. One stepwell in Gachibowli, two in Kokapet and one in Bapu Ghat are the ones that are getting a facelift with the help of such warriors. They have incorporated methods to recharge ground water as part of their setwell restoration project. With the help of basic infrastructure, they are draining the rain water into these wells. The rainwater from roofs of buildings located near the wells is also being diverted into these water bodies.

Members of The Rainwater Project, the group restoring the stepwells in Gachibowli and Kokapet, said the structures were being re-



The Bhagwandas Bagh Baoli near Gudimalkapur was recently restored by the HMDA. The authorities are also planning to revive several other stepwells, including one in Gachibowli, two in Kokapet and one in Bapu Ghat. — Photos: Surya Sridhar

stored to their original grandeur. "We see so many old heritage structures being cemented, but while restoring the Gachibowli stepwell, even the lime inside the well was tested before taking up structural alterations. Ready mix with similar lime concentration was used while restoring," said Kalpana Ramesh, founder of the forum. "Chirec International, appreciating our commitment, decided to fund the project," she said. Water from the roofs of a Madrasa, a Mosque and other structures were diverted into the Gachibowli stepwell. For Kokapet stepwell, rain water from a Gaushala roof is being diverted into it.



MUCH-NEEDED EFFORTS

WELLS RESTORED BY GOVERNMENT

Bhagwandas Bagh Baoli in Gudimalkapur - one of the oldest stepwells in the city

- Shiv Bagh Baoli in Gudimalkapur is a stepwell with historical significance
- Restoration works are underway at a historical well near Saidanima tomb

WELLS BEING RESTORED BY WATER WARRIORS

- Gachibowli stepwell
- Two stepwells in Kokapet
- Bapu Ghat stepwell

Millennium Post 13-May-2021

Provide tap water connections to village households'

NEW DELHI: The Centre has issued an advisory to states and union territories to provide tap water connections on priority to the remaining few households in those villages with over 90 per cent coverage of such supply, the Jal Shakti Ministry said on Wednesday.

There are more than 21,000 villages in the country where remaining 10 per cent households are yet to be provided with household tap water supply.

It was emphasised that these households can be easily covered by taking up retrofitting/augmentation work of the existing drinking water supply systems and thus, may be prioritised without any further delay and ensure its 100 per cent coverage by the end of this month. This issue will also be reviewed regularly, the ministry said.

"The National Jal Jeevan Mission (NJJM), Department of Drinking Water & Sanitation (DDWS), Ministry of Jal Shakti issued an advisory to states/UTs to provide tap water connections on priority to the remaining few households in those villages with more than 90 per cent coverage of household tap water connections," the ministry said.

States have been urged for

There are more than 21,000 villages in the country where remaining 10 per cent households are yet to be provided with household tap water supply

the provision of potable tap water to 'all households' in a village under the Jal Jeevan Mission (JJM) based on the principle of equity and inclusiveness. Under the JJM, every rural household is to be provided with tap water supply in adequate quantity of prescribed quality on regular and long-term basis and ensuring that 'no one is left out' with a target of 2024.

In less than two years of the mission and despite challenges faced due to the COVID-19 pandemic, more than 4.17 crore households have been given tap water connections, the ministry said.

Sixty-one districts, 731 blocks, more than 89,000 villages have become 'Har Ghar Jal' i.e. 100 per cent households in these areas are provided tap water supply.

AGENCIES

Haribhoomi 13-May-2021

बिहार में मूसलाधार से जलमग्न हुए कई क्षेत्र

एजेसी ► पटना

राजधानी पटना समेत बिहार के कई जिलों में बुधवार सुबह से बारिश हो रही है। उत्तर बिहार के कुछ जिलों में तो मूसलाधार बारिश हुई। बारिश के बाद कई इलाकों में जल जमाव हो गया। मौसम विभाग ने मुजफ्फरपुर सहित कई जिलों में अगले तीन दिनों तक बारिश के साथ ही आंधी चलने की है आशंका जताई है। तेज बारिश के

साथ चल रही आंधी के कारण कई जिलों के किसानों को



आम, लीची और केले की फसल को नुकसान होने का डर सता रहा है। बुधवार को सीतामढ़ी, मधुबनी, दरभंगा, वैशाली, समस्तीपुर, किशनगंज, सुपौल, मधेपुरा, सहरसा, अररिया, पूर्णिया, कटिहार, भागलपुर बांका और खगड़िया में बारिश हुई है।

Haribhoomi 13-May-2021

नम हवाओं के कारण मौसम का मिजाज बदलते ही टूटा दस सालों का रिकॉर्ड

हरिभूमि न्यूज ► रायपुर

बंगाल की खाड़ी से आ रही नम हवाओं के साथ ही लगातार बन रहे द्रोणिका व चक्रवात के प्रभाव से छत्तीसगढ़ में मौसम का मिजाज बदल गया। इस साल इस तरह से बदलाव आया है कि मई में बीते दस सालों का रिकॉर्ड इन दस दिनों में ही टूट गया है। चौबीस घंटे में हुई सर्वाधिक बारिश के मामले में राजधानी रायपुर में अब सर्वाधिक बारिश साल 2020 में 34.1 मिली मीटर यानी एमएम दर्ज हुई थी, जो नौ मई 2021 को टूट गया।

इस दिन रायपुर में 54 एमएम बारिश दर्ज की गई। जबरदस्त बारिश की वजह से गर्मी के इस मौसम में भी ठंडकता आई है और अधिकतम व न्यूनतम तापमान में गिरावट आई है। बीते दस सालों में पूरे मई में सबसे कम न्यूनतम तापमान 20.2 डिग्री सेल्सियस साल 2020 में रहा। लेकिन 10 मई 2021 को रायपुर में न्यूनतम तापमान 20.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मौसम का मिजाज बदलने की वजह से अब तक लोगों को तपाने के लिए जाना जाने वाला गर्मी का महीना काफी ठंडक भरा हुआ है। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि ऐसा देखा गया है कि मई में बारिश होती है, लेकिन यह बारिश मई के आखिरी हफ्तों में ही ज्यादातर होती है। यह पहली बार है कि मई के पहले दस दिनों में ही जबरदस्त बारिश हो गई है।

विदर्भ के ऊपर स्थित है एक चक्रीय चक्रवात घेरा



मौसम अलर्ट

यह बन रहा सिस्टम

मौसम विज्ञानी एचपी चंद्रा ने बताया कि एक चक्रीय चक्रवात घेरा विदर्भ के ऊपर 1.5 किलोमीटर ऊंचाई तक स्थित है। साथ ही पूर्व पश्चिम द्रोणिका भी मध्य पाकिस्तान व उससे लगे राजस्थान से पश्चिम बंगाल, असम, उत्तर प्रदेश के मध्य भाग होते हुए 0.9 किलोमीटर ऊंचाई तक स्थित है।

कल से सामान्य होने के आसार

मौसम विज्ञानियों का कहना है कि मौसम गुरुवार से थोड़ा सामान्य होने के आसार है और अधिकतम व न्यूनतम तापमान में थोड़ी बढ़ोतरी हो सकती है।

सब्जियों को नुकसान

कृषि वैज्ञानिक जीके दास ने बताया कि मौसम में बदलाव की वजह से हो रही बारिश के चलते सब्जियों की फसलों को नुकसान होगा। धान की खड़ी फसल को किसी प्रकार से नुकसान नहीं है, लेकिन सब्जियों को काफी नुकसान होगा और वे खराब होंगी।

सुबह बादल, दोपहर धूप

मंगलवार को भी चक्रवात के प्रभाव से राजधानी रायपुर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में सुबह बादल छाए रहें। साथ ही कुछ क्षेत्रों में तो बारिश भी हुई, लेकिन दोपहर को तेज धूप निकल गई। यह सिलसिला बुधवार को भी दोपहर तक बना हुआ है। संभावना जताई जा रही है कि मौसम फिर बदल सकता है।

Dainik Jagran 13-May-2021

पानी की बूंद-बूंद बचाने को बढ़ाई हरियाली, क्षेत्र में आई खुशहाली

मग्न के वृक्षमित्र जयराम ने 25 साल में लगाए करीब 11 लाख पौधे, पत्नी और स्वजन की नाराजगी के बाद भी नहीं छोड़ा अपना उद्देश्य



मनोज श्रीवास्तव • वृत्तलिखक

अगर आपमें इच्छाशक्ति हो तो आपका हर आचार, विचार और व्यवहार पानी को सहेजने के नाम हो जाता है। मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले के जयराम मीणा इसके अनुकरणीय उदाहरण बन चुके हैं। राजस्थान से सटे अपने गांव में पानी की किल्लत देखी तो जल संरक्षण के लिए पर्यावरण को हरा-भरा करने का बीड़ा उठा लिया। मध्य प्रदेश सरकार उनके इस काम के लिए 2006 में



राजस्थान के कोटा जिले में स्थित हांडीपाली महादेव मंदिर के सामीप बेल का पौधा रोपते जयराम • लौकन्य स्वयं

फसल से मिलने वाली राशि खर्च करते हैं मिशन में जयराम की 15 बीघा जमीन है। पांच बीघा में बोई फसल से मिलने वाली राशि पौधे, टी-गार्ड, खाद-बीज और पानी की व्यवस्था में खर्च करते हैं। जयराम को पौधे लगाने की ऐसी लगन थी कि उन पर पत्नी व स्वजन की नाराजगी का भी असर भी नहीं पड़ा। बाद में उनकी पत्नी और स्वजन को जल संरक्षण का महत्व समझ आया। पत्नी भी उनके काम में सहयोग भी करने लगी।

उत्तराखंड और महाराष्ट्र तक पहुंचा सफर

जयराम बताते हैं कि महाराष्ट्र के नासिक में स्थित त्र्यंबकेश्वर में बेल के 430 और उत्तराखंड में हरिद्वार के कनखल में गंगा नदी के किनारे 1500 से अधिक पौधे लगाए हैं। बता दें, त्र्यंबकेश्वर द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इन दिनों मीणा राजस्थान में कोटा जिले के हांडीपाली में पालेश्वर महादेव मंदिर के समीप करीब 25 बीघा बीहड़ को समतल कर पौधे लगा रहे हैं।

अमृता देवी विश्वनोई सम्मान दे चुकी है। जयराम का दावा है कि वह 25 साल में 11 लाख से अधिक पौधे लगा चुके हैं। श्योपुर जिले के बासौंद गांव के जयराम मीणा कहते हैं कि

गांव के कई इलाकों में पानी का संकट रहता था। जब वह 12 साल के थे तब उनके दादाजी मथुरालाल मीणा गांव के आसपास पौधे लगाते थे। उन्होंने भी घर के पास पांच पौधे

लगाए। इसके बाद जल संरक्षण के लिए हरियाली करने की धुन ऐसी सवार हुई कि गांव के आसपास के अलावा कस्बों की ओर जाने वाली सड़कों के किनारों पर दर्जनों पौधे

जयराम मीणा का पर्यावरण और जल संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय योगदान है। उन्होंने जिले में काफी पौधे लगाए हैं। अगर इसी तरह अन्य लोग भी प्रयास करें तो निश्चित ही जिले की तस्वीर बदल जाएगी। सुधांशु यादव, जिला वन अधिकारी, सामान्य वन मंडल, श्योपुर

जल है तो कल है

जल संरक्षण दैनिक जागरण के सात सरोकारों में शुमार है। इसी क्रम में हम जल प्रहरियों के प्रेरक कार्यों को पाठकों तक पहुंचा रहे हैं। हमारी कोशिश है कि इन प्रहरियों से प्रेरणा ले ज्यादा से ज्यादा लोग जल संरक्षण के काम में सहभागी बनें।

लगाए। फिर 11 लाख पौधे लगाने का संकल्प लिया, जो 2016 में पूरा हुआ।

जल सहेजने में सहायक होते हैं पेड़ : पर्यावरणविद कैलाश पाराशर के

मुताबिक बारिश में पेड़ों की जड़ें पानी को रोकती हैं। उसे जमीन में संरक्षित करती हैं। इससे भूजल में वृद्धि होती है और पानी के जमीन में जाने का क्रम बना रहता है। कहा जा सकता है कि जल संरक्षण को बढ़ावा देना है तो पेड़-पौधों को बचाना और बढ़ाना होगा।

फलदार और छायादार पौधों पर जोर : पिछले 25 सालों में जयराम ने फलदार आम, जामुन, अमरुद, बेल व पपीता के पौधे लगाए हैं। इसके अलावा पीपल, नीम, शीशम, बरगद, सागौन के पौधे भी लगाए हैं। वह कहते हैं कि हांडीपाली में छायादार पौधों के अलावा जड़ी-बूटी के पौधे भी रोप रहे हैं।



स्कैन करें और पढ़ें 'सहेज लो, हर बूंद' अभियान की अन्य सामग्री।